पाठ के आस-पास

प्रश्न-3- आप बाजार की भिन्न-भिन्न प्रकार की संस्कृति से अवश्य परिचित होंगे। मॉल की संस्कृति और सामान्य बाजार और हाट की संस्कृति में आप क्या अंतर पाते हैं? पर्चेजिंग पावर आपको किस तरह के बाजार में नज़र आती है?

उत्तर- हमने तीनों प्रकार के बाजार देखे हैं।
मॉल संस्कृति सम्पन्न वर्ग तथा उच्च गृहय वर्ग से संबंधित है वहाँ पर्चेजिंग पावर को बढ़ावा मिलता है वहाँ एक ही छत के नीचे सभी तरह के सामान मिलते है वहाँ चकाचौंध व लूट चरम सीमा पर होती है सामान्य बाजार में सभी प्रकार के ग्राहक जाते है जिसमें गृहयमवर्गीय परिवार की प्रमुखता होती है। यहाँ ग्राहक और दुकानदार में सद्भाव होता है।
हाट - संस्कृति — में निम्न वर्ग व ग्रामीण परिवार होता

है। इसमें आवश्यकता की वस्तुएं कम दामों में ही मिलती है इसलिए इसमें दिखावा कम तथा मोल भाव भी नाममात्र का होता है।

इन तीनों बाजारों में हमें फीजिंग पार्क मॉल में देखने को मिलते है जहाँ सामान्य वस्तु की कीमत भी ज्यादा होती है।

प्रश्न-4- लेखक ने पाठ में संकेत किया है कि कभी-कभी बाजार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है क्या आप इस विचार से सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर- हाँ, हम इस विचार से पूर्णतः सहमत है कि कभी कभी बाजार में आवश्यकता ही शोषण का रूप धारण कर लेती है। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जब ग्राहक अपनी आवश्यकता को बताता है तो दुकानदार उस वस्तु के दाम बढ़ा देता है। हाल ही में बाजार में प्याज के दामों में भारी उछाल आया क्योंकि इसकी कमी का अंदेशा था तथा वह आम आदमी के लिए जरूरी वस्तु थी।

प्रश्न-5- 'स्त्री माया न जोड़े' यहाँ माया शब्द किस ओर संकेत कर रहा है? स्त्रियों द्वारा माया जोड़ना प्रकृति प्रदत्त नहीं बल्कि परिस्थितिवश है। वे कौन सी परिस्थितियाँ हैं जो स्त्री को माया जोड़ने के लिए विवश कर देती हैं?

उत्तर- यहाँ 'माया' शब्द धन दौलत की ओर संकेत कर रहा है। स्त्रियाँ स्वभाव से ही सामान इकट्ठा करने की प्रवृत्ति रखती है। जब भी बाजार जाती है, कुछ न कुछ वस्तु जरूर खरीद लाती है। अगर परिस्थिति अनुकूल हो तो यह खरीददारी शौक बन जाता है।

स्त्री माया अर्थात धन-दौलत

लेने के लिए लालायित रहती है। एक तरफ समान के प्रलोभन जहाँ वह सुविधा खोजती है, वहीं दूसरी तरफ पड़ोसी व परिचितों के बीच स्वयं आगे रहना चाहती है। वस्त्र व जेवर के प्रति उनका मोह सदा बना रहता है।

अतिरिक्त प्रश्न –

प्रश्न- बाजार दर्शन पाठ का प्रतिपाद्य बताइए-

उत्तर- प्रतिपाद्य – बाजार दर्शन निबंध में गहरी वैचारिकता व साहित्य के सुलभ लालित्य का संयोग है। कई दशक पहले लिखा गया यह लेख आज भी उपयोगितावाद व बाजारवाद को समझने में बेजोड़ है। लेखक अपने परिचितों मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए यह स्पष्ट करता है कि बाजार की जादुई ताकत प्रत्येक मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है। यदि मनुष्य अपनी आवश्यकता को समझते हुए बाजार का उपयोग करे तो उसका सच्चा लाभ उठा सकता है। क्योंकि बाजार की चमक दमक में फँसने के बाद हम असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या के वशीभूत हो जाते हैं। इस लेख में लेखक ने अपनी बात कभी दार्शनिक तर्क से तो कहीं छोटी-छोटी कहानी की तरह अपनी बात समझाने की कोशिश की है। इसी क्रम में उन्होंने बाजार का पोषण करने वाले अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र बताया है।